International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-01-2021; Accepted: 01-02-2021; Published: 24-02-2021
www.socialsciencejournal.in
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 141-146

गंगा नदी प्रवाह तन्त्र एवं तट पर बसे नगर

डॉ. मुकेश कुमार[1], डॉ. मोना बाला[2]

[1] **G**uest Faculty, Department of Geography, S.G.G.S. College, Patna Saheb, Patliputra University, Patna, Bihar, India.
[2] Guest Faculty, P.G. Department of Sanskrit, Patna University, Patna, Bihar, India

सारांश
प्रस्तुत शोध–पत्र द्वारा भारत में बहने वाली विश्व प्रसिद्ध गंगा नदी तन्त्र की चर्चा की गई है। भारत में इसके तट पर स्थित प्रमुख नगर एवं उसके महत्त्व की चर्चा की गई है साथ ही साथ गंगा नदी की धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। भारत में गंगा नदी केवल नदी नहीं है बल्कि आध्यात्मिक, सांस्कृतिक चेतना के साथ देवी एवं मॉ के रूप में पूजित एवं प्रतिष्ठित है। गंगा नदी तट पर अपने उद्गम स्थल से सागर मिलन स्थल तक कई प्राचीन धार्मिक तीर्थ स्थल हैं। धार्मिक तीर्थ स्थल के अलावे गंगा नदी के तट पर कई औद्योगिक एवं ऐतिहासिक नगर बसे हैं। गंगा नदी भारत में बहने वाली सबसे बड़ी एवं सबसे पवित्र नदी होने के बावजूद भी अपने उद्गम स्थल पर एवं मुहाना पर गंगा नदी के नाम से नहीं जानी जाती है। भारत वर्ष के उत्तराखण्ड राज्य में देवप्रयाग नामक स्थल पर भागीरथी एवं अलकनन्दा नदी का मिलन होता है, इन दो जल स्त्रोत के मिलन के बाद एकीकृत हुए जल स्त्रोत को गंगा नाम से जाना जाता है। परन्तु गंगा नदी का उद्गम भागीरथी नदी के उद्गम स्थल अर्थात् गोमुख को माना जाता है। देवप्रयाग से गंगा ऋषिकेश होते हुए हरिद्वार पहुॅचती है। हरिद्वार से गंगा नदी मैदानी क्षेत्र में बहती है, इससे पूर्व नदी पहाड़ी घाटी में बह रही होती है। गंगा नदी भारत के पॉच राज्यों से हो कर बहती है जबकि गंगा नदी तन्त्र भारत के ग्यारह राज्यों में फैली है। गंगा नदी पश्चिम बंगाल में दो वितरिकाओं में बॅट जाती है। गंगा की मुख्य धारा बंगलादेश में पद्मा नदी के नाम से बहती है जिसमें ब्रह्मपुत्र नदी एवं मेघना नदी मिलती है, मेघना नदी के मिलने के बाद यह नदी मेघना नाम से सागर में मिलती है वही पश्चिम बंगाल में गंगा की दूसरी धारा हुगली नदी के नाम से भारत में बहती है और अन्त में बंगाल की खाड़ी में जा मिलती है। गंगा नदी तट पर हरिद्वार, बनारस, प्रयाग, विंध्याचल, गंगा सागर जैसे धार्मिक नगर बसे हैं वही पटना, कोलकता जो बिहार एवं पश्चिम बंगाल राज्य की राजधानी है, बसी है। कानपुर, कन्नौज, भागलपुर औद्योगिक नगर बसे है। गंगा जल की ऐसी विशेषता है जो किसी जल में प्राप्त नहीं होता है यह विशेषता है गंगा जल का कभी खराब नहीं होने का। वैज्ञानिकों का मत है कि गंगा जल में बैक्टीरियोफेज नामक विषाणु होते हैं, जो जीवाणुओं एवं अन्य हानिकारक सूक्ष्मजीवों को जीवित नहीं रहने देता है जिससे गंगा जल कभी खराब नहीं होता है।

मूल शब्दः गंगा नदी, नगर, हिमालय, भारत, हिमनद

प्रस्तावना
विश्व की प्रायः सभी सभ्यता नदी घाटी सभ्यता रही है अर्थात् सभ्यता का उद्गम नदी का तट रहा है। भारत में भी प्राचीन सभ्यता सोहन नदी घाटी सभ्यता, सिन्धु नदी घाटी सभ्यता, नदी के तट पर ही विकसीत हुए थे। वैदिक काल में भी सभ्यता नदी के तट पर ही फली–फूली। वेद में कई नदियों का वर्णन प्राप्त होता है उनमें से एक पवित्र नदी गंगा का भी वर्णन है। ऋग्वेद, रामायण, महाभारत एवं कई पुराणों में गंगा नदी का वर्णन है। इन ग्रन्थों में गंगा नदी को भगीरथी, जह्नवी, गंगा, विष्णुपदी नामों के साथ सरित्श्रेष्ठ, पुण्य सलिला, पाप नाशिनी, मोक्ष प्रदायिनी, महानदी इत्यादि उपनामों से संबोधन किया गया है। संस्कृत कवि जगन्नाथ राय ने 'श्रीगंगालहरी' नामक काव्य लिखा है। हिन्दी कवि विद्यापति, कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास , जायसी इत्यादि ने गंगा के आध्यात्मिक महत्त्व का गुणगान किया है। दक्षिण भारत में स्थित महाबलिपुरम् में गंगा से जुड़ी धार्मिक वर्णन का चित्रण प्राप्त होता है। भारत वर्ष के उत्तरी भाग में बहने वाली सबसे पवित्र एवं प्रसिद्ध नदी गंगा है। हिन्दूओं के बीच यह नदी मॉ एवं देवी के रूप में पूजित एवं प्रतिष्ठित है। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु के पद से निकले जल भगवान ब्रह्मा के कमण्डल में पहुॅचा और गंगा की उत्पति हुई। पृथ्वी पर गंगा राजा भगीरथ के अथक प्रयास से आई। कथा के अनुसार राजा सगर के अश्वमेघ यज्ञ के घोड़ों को देवराज इन्द्र कपिल मुनि के आश्रम में रख देते हैं। राजा सगर के साठ हजार पुत्र कपिल मुनि को घोड़ा चोर समझ कर उन्हें अपमानित करने लगते हैं। कपिल मुनि द्वारा बार–बार समझाने के बाद भी राजा सगर के पुत्र द्वारा दुर्व्यवहार में कमी नहीं आती है जिससे क्षुब्ध होकर कपिल मुनि राजा सगर के साठ हजार पुत्र को अपने तप बल से भस्म कर देते हैं। भस्म हुआ शरीर की आत्मा को मुक्ति नहीं होती है, मुक्ति हेतु गंगा जल की जरूरत हैं पर पृथ्वी पर गंगा का अवतरण नहीं हुआ है। राजा सगर के वंश में राजा भगीरथ हुए, वे अपने पूर्वज के मुक्ति हेतु गंगा को स्वर्ग से धरती पर लाने के लिए अथक प्रयास करते हैं, उनके परिश्रम से गंगा स्वर्ग से धरती पर आने को राजी हो जाती हैं पर गंगा के तेज बहाव एवं अत्यधिक जल के होने से पृथ्वी के बहने का भय है। गंगा के तीव्र बहाव को नियंत्रित करने हेतु भगीरथ भगवान शिव की आराधना करते हैं। भगवान शिव राजा भगीरथ पर प्रसन्न हो जाते हैं और गंगा के बहाव को नियंत्रित करने को राजी हो जाते हैं। गंगा जब स्वर्ग से धरती पर अवतरित होती हैं तो भगवान शिव, गंगा को धरती पर उतने के पहले अपने जट्टा में समा लेते हैं, इस संबंध में महाभारत में वर्णन प्राप्त होता है–

तत्र स्थित्वा नरश्रेष्ठं भागीरथमुवाच ह।
प्रयाचस्व महाबाहो शैलराजसुतां नदीम्।।
(महा. –3/110/4)

और फिर भगवान शिव अपने जट्टा से गंगा की कुछ धाराओं में पृथ्वी पर छोड़ा, इस प्रकार गंगा का अवतरण स्वर्ग से धरती पर हुआ। भारत में ऐसी मान्यता है कि भगवान शिव का निवास

स्थान हिमालय के कैलास पर्वत पर है और गंगा इन्हीं क्षेत्र से निकलती है। गंगा नदी लम्बाई की दृष्टि से विश्व में 37 वें स्थान पर है परन्तु भारत के सबसे ज्यादा क्षेत्र में बहने वाली यह नदी है। सिन्धु एवं ब्रह्मपुत्र नदी की लम्बाई गंगा से ज्यादा है पर ब्रह्मपुत्र नदी का ज्यादा भाग तिब्बत में बहता है वही सिन्धु नदी का ज्यादा भाग पाकिस्तान में बहता है। गंगा नदी भारत के बहुत बड़े क्षेत्र को सिंचित करती है। सन् 2008 ई. में गंगा नदी को भारत की राष्ट्रीय नदी की घोषणा की गई तथा प्रयाग से हल्दिया के बीच 1512 किलो मीटर की गंगा नदी जलमार्ग को राष्ट्रीय जल मार्ग बनाये जाने की घोषणा किया गया।

उदेश्यः गंगा नदी के उद्गम से सागर मिलन तक के बीच में इसके तट पर स्थित प्रमुख शहर की विशेषता एवं गंगा नदी तन्त्र का विश्लेषण करना साथ ही गंगा नदी के महत्त्व को बतलाना है।

अध्ययन की विधियॉं: गंगा नदी पर पूर्व के विश्लेषण को आधार बनाया गया है। गंगा नदी के तट पर स्थित कुछ प्रमुख नगरों पर स्वयं जाने से हुए अनुभव एवं वहॉं के लोगों की चर्चा से ज्ञात जानकारी।

अध्ययन का क्षेत्रः प्रस्तुत आलेख का अध्ययन क्षेत्र भारत में बहने वाली गंगा नदी के उद्गम स्थल हिमालय के हिमनद से सागर में मिलन स्थल गंगा सागर तक का है।

विश्लेषण– भारतः की सबसे पवित्र एवं सबसे महत्त्वपूर्ण सरिता गंगा है। यह भारत एवं बंगलादेश में बहती है। यह नदी उद्गम से सागर मिलन तक कुल 2525 किलोमीटर की दूरी तय करती है। इस दरमियान भारत के पॉच राज्यो से होकर बहती है जिसमें सबसे ज्यादा 1450 किलोमीटर उत्तर प्रदेश में बहती है और सबसे कम दूरी झारखण्ड राज्य में बहती है। गंगा द्रोणी के भारत में 8.6 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैली है जो भारत का सबसे बड़ा अपवाह तंत्र है। गंगा नदी अपने सहायक नदियों के साथ अति विशाल एवं उपजाऊ भूखण्ड मैदान को सिंचित करती है। जलग्रहण क्षेत्र के संदर्भ में गंगा नदी भारत की सबसे बड़ी नदी घाटी है, जो भारत के 27 प्रतिशत भू–भाग में फैली है तथा भारत के कुल आबादी का 47 प्रतिशत लोग इस नदी तन्त्र क्षेत्र में रह रहे हैं। इस नदी का मैदानी भाग सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है एवं घनी आबादी बसी हुई है। गंगा नदी अपने मुहाने पर विश्व की सबसे विशाल डेल्टा सुन्दर वन नामक डेल्टा का निर्माण करती है।

चित्र 1

विश्व में भारत की प्रमुख एवं पवित्र नदी के रूप में मशहूर गंगा अपने उद्गम एवं मुहाने पर गंगा नाम से नहीं जानी जाती है। उत्तराखण्ड राज्य में देवप्रयाग से गंगा नदी मानी जाती है। यहॉं पर भागीरथी एवं अलकनन्दा का संगम है। देवप्रयाग के पूर्व गंगा की प्रमुख छः जल स्त्रोत (नदी) हैं। गंगा की मुख्य धारा उत्तराखण्ड राज्य के उत्तरकाशी जिला मे गोमुख नामक स्थल पर

गंगोतरी ग्लेशियर से प्रकट होती है। इसे ही गंगा का उद्गम स्थल माना जाता है जो कि समुद्र तल से 3892 मीटर अर्थात् 12,770 फीट की ऊँचाई पर और $30^0 50'10''$उत्तरी अक्षांश तथा $78^0 59'30''$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। गोमुख से गंगोतरी तीर्थ स्थल लगभग 18 किलो मीटर की दूरी तक इस जल प्रवाह को जाह्नवी एवं गोमुखी गंगा नाम से भी जाना जाता है। गंगोतरी तीर्थ स्थल एक अति प्राचीन तीर्थ है।यहॉ पर गंगा जी का प्रसिद्ध मन्दिर है जिसे 18 वी. शताब्दी में गोरखा कमाण्डर अमर सिंह थापा ने बनवाया था। यह स्थल समुद्रतल से लगभग 3140 मीटर (10,300फीट) की ऊँचाई पर अवस्थित है। पुराणों में ऐसा वर्णन है कि राजा भगीरथ ने गंगा को स्वर्ग से धरती पर लाने हेतु इसी स्थल पर तप किया था और इसी स्थल पर गंगा नदी स्वर्ग से धरती पर अवतरीत हुई जो राजा भगीरथ के नाम पर भागीरथी नदी कहलाई, प्रायः विद्वानों का मत है कि पहले गंगोत्री ग्लेशियर यहॉ तक था। महाभारत में भगीरथ को गंगा से साक्षात्कार होने का वर्णन प्राप्त होता है–

संवत्सरसहस्त्रे तु गते दिव्ये महानदी ।
दर्शयामास तं गंगा तदा मूर्तिमती स्वयम् ।।
(महा. –3 / 108 / 14)

आगे भागीरथी नदी के तट पर उत्तरकाशी नगर स्थित है, जो कि समुद्रतल से 1158 मीटर (3800 फीट) की ऊँचाई पर स्थित है। यहॉ नेहरू पर्वतारोहण संस्थान है, जिसमें पर्वत पर चढ़ने का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह एक प्राचीन हिन्दू तीर्थ स्थल है। आगे भागीरथी का संगम भिलांगना नदी से होता है जिसे गणेश प्रयाग कहा जाता है, इसी संगम स्थल पर टेहरी बांध बनाया गया है। यहॉ से आगे भागीरथी नदी देवप्रयाग पहुॅचती है। जहॉ अलकनन्दा नदी से संगम होता है। अलकनन्दा नदी सतोपथ हिमनद से निकलती है यहॉ इसे विष्णु गंगा भी कहा जाता है। इसी के तट पर भारत का अति प्रसिद्ध एवं प्रमुख्य तीर्थ बद्रीनाथ है। बद्रीनाथ गढ़वाल मण्डल के चमोली जनपद में स्थित है जो कि समुद्रतल से 3133 मीटर अर्थात् 10,350 फीट की ऊँचाई पर है और नर–नारायण पहाड़ के बीच 30^0 $44'29''$उत्तरी अक्षांश तथा $79^0 32'1''$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह हिन्दूओं का अति प्रमुख तीर्थ स्थल है एवं चार धामो में से एक धाम है। पुराणों में ऐसा वर्णन है कि भगवान विष्णु ने यहॉ तप किया था। भगवान विष्णु को मौसम से सुरक्षित रखने हेतु भगवान विष्णु की पत्नी मॉ लक्ष्मी एक वेर के पेड़ का रूप धारण कर भगवान विष्णु के सर के ऊपर छायादार छत्री बनी रही, जब भगवान विष्णु तप से उठे तो पाया की मेरे साथ लक्ष्मी जी भी एक प्रकार से तप कर रही थी तब भगवान विष्णु ने मॉ लक्ष्मी से कहा कि आज से यह क्षेत्र आपके नाम से जाना जायेगा और मुझे लोग आपका नाथ कहेगे। वेर के पेड़ को संस्कृत में बद्री कहा जाता है इस प्रकार इस क्षेत्र को बदरी विशाल एवं भगवान विष्णु को बद्रीनाथ कहा जाता है। यह तीर्थ स्थल होने से ग्रीष्म ऋतु में देश के अन्य क्षेत्रों से लोग यहॉ आते हैं जिससे यहॉ के लोगों का रोजी–रोजगार चलता है। यह क्षेत्र चीन (तिब्बत) के सीमा रेखा से सटा होने के कारण इस क्षेत्र का सामरिक महत्त्व भी काफी बढ़ जाता है। विष्णु गंगा (अलकनन्दा) नदी आगे बढ़कर धौली गंगा से संगम करती है, धौली गंगा मिलाम नामक हिमनद से निकलती है। जिस स्थल पर ये दो नदियॉ मिलती हैं उस स्थल को विष्णु प्रयाग कहा जाता है। यहॉ पर कोई शहर या गॉव नहीं बसा है। विष्णु प्रयाग से तीन मील आगे जोशीमठ नगर है, जब बद्रीनाथ का कपाट बंद रहता है तब यहॉ बद्रीनाथ की पूजा होती है। यहॉ से अलकनन्दा नदी आगे चलकर नन्दकानी नदी से मिलती है और इस संगम स्थल को नन्द प्रयाग कहा जाता है। यहॉ से आगे अलकनन्दा नदी पिण्डर नदी से मिलती है, इस संगम स्थल को कर्ण प्रयाग कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि महाभारतकालीन अंग प्रदेश के राजा कर्ण ने यहॉ पर तप किया था और उन्ही के नाम पर इस संगम को कर्ण प्रयाग कहा जाता है। यहॉ प्राचीन उमा देवी का मन्दिर है। यहॉ से अलकनन्दा नदी आगे जाकर मन्दाकनी नदी से मिलती है, इस संगम को रूद्र प्रयाग कहा जाता है। यहॉ पर भगवान शिव का प्रचीन मन्दिर है। पुराणों के अनुसार इसी स्थल पर भगवान शिव ने अपना वीणा देवर्षि नारद को प्रदान किया था। मन्दाकिनी नदी का उद्गम केदारनाथ के पास एक हिमनद से होती है। केदारनाथ एक अति महत्त्व तीर्थ स्थल है। यह समुद्रतल से 3584 मीटर अर्थात् 11,760 फीट की ऊँचाई पर तथा $30^0 44'15''$उत्तरी अक्षांश तथा $79^0 6'33''$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह शिव के बारह ज्योर्तिलिंग में से एक ज्योर्तिलिंग है। कथा के अनुसार महाभारत युद्ध के बाद श्रीकृष्ण के कहने पर पाण्डव भगवान शिव से मिलने गये परन्तु शिव पाण्डव से नहीं मिलना चाहते थे और शिव भैसा का रूप धारण कर विचरण करने लगे। श्रीकृष्ण महिष रूप धारी शिव को पहचान गये और पाण्डवों को इशारा किया, श्रीकृष्ण के ईशारे पर पाण्डव महिष रूप धारी शिव को पकड़ने लगे तब महिष रूप धारी शिव अपने सर को जमीन के निचे घुसाने लगे तभी भीम ने महिष रूप धारी शिव को पकड़ने लगे जिससे महिष रूप धारी शिव का पीठ हिस्सा केदारनाथ में रह गया, सर नेपाल स्थित पशुपतिनाथ में प्रकट हुआ एवं महिष का चार अन्य हिस्सा उत्तराखण्ड के अन्य पहाड़ की चोटी पर प्रकट हुआ और इस प्रकार पंच केदार तीर्थ बना। केदारनाथ कई वर्षो तक बर्फ से ढका रहा। इस मन्दिर का निर्माण आदि शंकराचार्य द्वारा किया गया है। यही पर शंकराचार्य का समाधी स्थल बना हुआ था परन्तु 2013 ई. में आये त्रास्दी में यह स्थल विलुप्त हो गया। मानव द्वारा इस क्षेत्र में कई मकान, होटल, धर्मशाला बना लिये गये थे जो त्रास्दी में बह गये परन्तु केदारनाथ का मुख्य मन्दिर में कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा इस चमत्कारी घटना ने लोगों के विश्वास को और भी दृढ़ता प्रदान किया। मन्दाकिनी के तट पर गुप्तकाशी एवं दूसरे तट उखीमठ है, शीतकाल में केदारनाथ की पूजा उखीमठ में होती है। रूद्र प्रयाग से आगे अलकनन्दा नदी के तट पर श्रीनगर स्थित है। प्राचीन समय में यह गढ़वाल की राजधानी रही है। वर्त्तमान समय में यह नगर काफी विकसीत है। यह नगर समुद्रतल से लगभग 560 मीटर अर्थात् 1900 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। श्रीनगर से आगे अलकनन्दा नदी देवप्रयाग में भागीरथी से मिलकर गंगा नाम से जानी जाती है। यह क्षेत्र समुद्रतल से लगभग 618 मीटर (2025 फीट) की ऊँचाई पर और $30^0 8'$ उत्तरी अक्षांश तथा $78^0 39'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। देवप्रयाग में भगवान राम का मन्दिर है। ऐसी मान्यता है कि रावण वध से राम को लगा ब्रह्म हत्या से मुक्ति हेतु श्रीराम ने यहॉ पर तप किया था और ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्ति पाई थी। यह स्थल पर दो अलग धाराओं का मिलन अति मनोरम दृश्य उत्पन्न करता है, एक धारा हरी है तो दूसरी धारा मटमैली रंग की। देवप्रयाग से कुछ ही दूरी पर राफटिंग सेन्टर है। जहॉ लोग गंगा की तेज धारा में नौकायन करते हैं। फूल चट्टी में गंगा नदी में नयार नदी(नाद गंगा)मिलती है। स्कन्द पुराण के केदारखण्ड में गंगा नदी के सात धारा की चर्चा है जिसमें छः धारा पंच प्रयाग में क्रमशः मिलती है और सातमी धारा नयार नदी है। देवप्रयाग से आगे गंगा ऋषिकेश पहुचती है। यह समुद्र तल से लगभग 356 मीटर अर्थात् 1168 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहॉ पर कई आध्यात्मिक केन्द्र हैं, विदेशी नागरिकों की बड़ी संख्या देखी जा सकती है। यहॉ का लक्ष्मण झूला, भरत मन्दिर, त्रिवेणी घाट, स्वर्गाश्रम, परमार्थ निकेतन, गीता भवन इत्यादि प्रसिद्ध हैं। यहॉ से लगभग छः किलोमीटर की दूरी पर नीलकण्ठ महादेव का मन्दिर है। यहॉ से गंगा आगे बढ़ते हुए हरिद्वार पहुचती है। यह एक अति प्राचीन नगर है। भारत के सप्त पूरियों

में से एक पुरी अर्थात् शहर है। पौराणिक काल में हरिद्वार को मायापुरी कहा जाता था। यहॉ प्रत्येक 12 वर्ष पर कुम्भ मेला लगता है। यहॉ पर गंगा मैदानी भाग में प्रवेश करती है। हरिद्वार में गंगा नदी से नहर बनाया गया है जिसे ऊपरी गंगा नहर कहा जाता है जो गंगा और यमुना के बीच के मैदानी भाग को सिंचीत करती है।

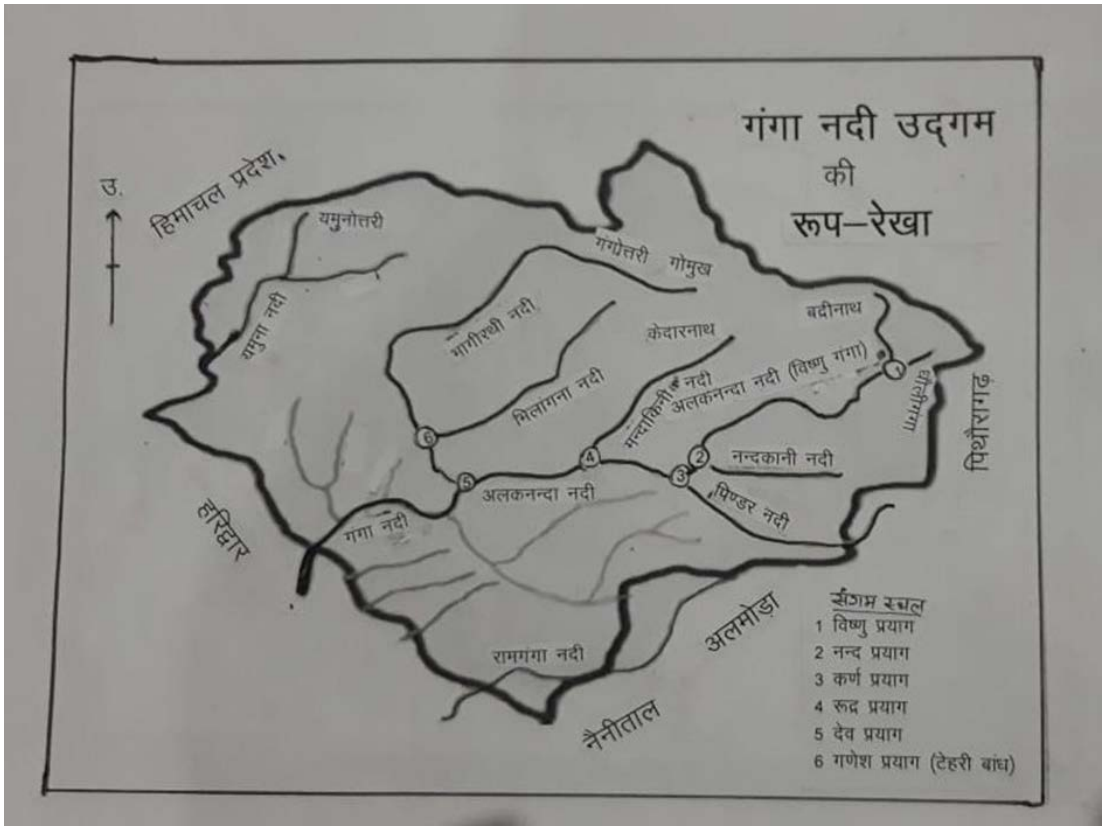

चित्र 2

हरिद्वार से आगे गंगा उत्तर प्रदेश राज्य में प्रवेश करती है। इसके तट पर बिजनौर नगर स्थित है। यहॉ से मध्य गंगा नामक नहर निकाला गया है। हस्तिनापुर महाभारतकालीन नगर है, जो गंगा के तट पर बसा है। आगे गढ़मुक्तेश्वर नगर है। यहॉ चट्टाई और मोढ़ा (बैठने का स्टूल) बड़े पैमाने पर बनाया जाता है। यहॉ से आगे गंगा माडू, अहार, अनुपशहर, नरोरा, फरूखाबाद, कमला गंज होते हुए कन्नौज पहुचती है। नरोरा में गंगा से निम्न गंगा नहर निकाली गई है। मध्यकालीन भारत में हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया था। वर्त्तमान में कन्नौज में इत्र बनाने का कार्य बड़े पैमाने पर होता है इस कारण इसे इत्र नगर भी कहा जाता है। कन्नौज के निकट हरदोई जनपद में गंगा नदी में राम गंगा नदी आकर मिलती है। यहॉ से आगे गंगा नदी के तट पर विठूर नगर है जो कि प्राचीन समय में ब्रह्मवर्त नाम से जाना जाता था यहॉ भगवान ब्रह्मा के खड़ाऊँ के चिन्ह आज भी हैं, ऐसी मान्यता है। स्वतंत्रता सेनानी तात्या टोपे का संबंध इस नगर से रहा है। आगे गंगा तट पर कानपुर नगर स्थित है। यह नगर विशेष रूप से चमड़े के उधोग के लिये प्रसिद्ध है। यहॉ के कल–कारखाने से निकला जल गंगा में डाल दिया जाता है इसकारण यहॉ गंगा जल बहुत ही ज्यादा प्रदूषित हो गई है, उधोग के जल का ट्रीटमेन्ट कर गंगा में डालने का कार्य किया जा रहा है। कानपुर से आगे गंगा प्रयाग पहुचती है, यहॉ गंगा नदी का यमुना नदी के साथ संगम होता है। यमुना गंगा नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है जो कि उत्तराखण्ड के बन्दरपूँछ हिमनद से निकलती है, यही पर यमुनोतरी धाम है, यह स्थल समुद्र तल से 3185 मीटर अर्थात् 10,450 फीट की ऊँचाई पर स्थित है, यहॉ से यमुना हिमाचल प्रदेश की सीमा को होते हरियाणा, दिल्ली होते उत्तर प्रदेश में नोयडा, मथुरा, आगरा, फिरोजाबाद, कोसामी होते हुए प्रयाग पहुचती है। मथुरा भगवान कृष्ण के जन्मभूमि होने के कारण हिन्दुओं के लिये प्रमुख तीर्थ स्थल है। यमुना नदी की मुख्य सहायक नदीं चम्बल, केन और वेतवा है, इनके अलावे और भी कुछ नदियॉ यमुना में मिलती है। प्रयाग में गंगा यमुना के साथ ही ऐसा माना जाता है कि सरस्वती नदी भी गुप्त रूप से यहॉ मिलती है अर्थात् गंगा, यमुना एवं सरस्वती तीन नदियों का संगम है इसकारण इसे त्रिवेणी भी कहा जाता है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार यह स्थल तीर्थ राज है। हिन्दुओं की अपार आस्था के कारण यह एक महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थल है, यहॉ हिन्दू कलेण्डर के माघ माह (जनवरी–फरवरी) में एक माह का मेला लगता है एवं प्रत्येक बारह वर्ष पर कुम्भ लगता है और दो कुम्भ के बीच में छः वर्ष पर अर्द्धकुम्भ का आयोजन किया जाता है। इस नगर को इलाहाबाद के नाम से जाना जाता रहा है। यह एक प्राचीन नगर है, वर्त्तमान समय में विकसीत नगर है। प्रयाग से आगे देवरिया से 11 किलोमीटर आगे टॉस नदी (तमसा नदी) गंगा में मिलती है। टॉस नदी मध्य प्रदेश के सतना जिला में कैमूर की पहाड़ी पर स्थित तमसकुण्ड से निकलती है। आगे गंगा तट पर विन्ध्याचल स्थित है, जो कि 51शक्ति पीठ में से एक प्रमुख शक्ति पीठ है। सालोभर यहॉ तीर्थ यात्री एवं शाक्त भक्तों का आना लगा रहता है। यहॉ से आगे गंगा तट पर मिर्जापुर एवं बनारस शहर है। बनारस में गंगा नदी वक्र होकर उत्तरायण हो जाती है। यहॉ गंगा नदी में वरूणा और असी नदी गंगा में मिलती है, वरूणा और असी नदी के नाम पर इस नगर का नाम वाराणसी पड़ा है। बनारस को काशी, वाराणसी भी कहा जाता है। इस नगरी को शिव की नगरी माना जाता है, यहॉ स्थित विश्वनाथ मन्दिर द्वादश ज्योर्तिलिंग में से एक है। यह नगर अपने गंगा घाटों एवं बनारसी साड़ी के लिये भी जाना जाता है। भारत की प्रमुख शिक्षण संस्थानों में एक बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय यहॉ है। वर्तमान समय में यह नगर

का फैलाव एवं विकास हुआ है। विश्वनाथ मन्दिर के आस–पास पतली गलियों का जाल बना हुआ था उसके स्थान पर मन्दिर के आस–पास के क्षेत्र को अधिग्रहण कर कॉरिडोर बनाया जा रहा है। यहॉ से आगे गाजीपुर के निकट कैथी में गोमती नदी, गंगा नदी में मिलता है। गोमती नदी उत्तर प्रदेश के पीलीभीत के निकट से निकलती है, इसके तट पर लखनऊ, वाराबंकी, सुल्तानपुर, जौनपुर जैसे नगर स्थित है।

गंगा नदी आगे बिहार राज्य के बक्सर में प्रवेश करती है, चौसा में कर्मनाशा नदी गंगा में मिलती है। कर्मनाशा नदी बहुत दूर तक बिहार और उत्तर प्रदेश की सीमा बनाती है। कर्मनाशा नदी को अपवित्र नदी माना जाता है इसकारण इसके तट पर एक भी घाट नहीं है और न ही एक भी मन्दिर है। बक्सर में भगवान राम द्वारा ताड़का का वध किया गया था एवं विश्वामित्र ऋषि की तपस्थली रही है। बक्सर में कई रामायणकालीन चिन्ह आज भी पूजित है, रामरेखा घाट बहुत ही प्रसिद्ध है। बक्सर का युद्ध जो 1764 ई में हुआ था। बक्सर के आगे छपरा में घाघरा नदी गंगा में मिलती है। घाघरा नदी मानसरोवर के निकट मापचा चुंग हिमनद से निकलती है। इस नदी की सहायक नदी शारदा नदी, सरयू नदी, राप्ती नदी है। सरयू नदी के तट पर अयोध्या नगर है तथा राप्ती के तट पर गोरखपुर नगर है। छपरा से आगे गंगा नदी बिहार की राजधानी पटना पहुचती है, इसका प्राचीन नाम पाटलिपुत्र था। मौर्यो ने अपनी राजधानी बनाया था उस समय यह नगर अपने वैभव के लिये जाना जाता था। यहॉ पटन देवी मन्दिर है जो 51 शक्ति पीठ में से एक है। सीखो के 10वे गुरू गोविन्द सिंह का जन्म स्थल होने के कारण हरमन्दिर साहेब गुरूद्वारा अति पवित्र स्थल है और यहॉ सीखो का आना सदा बना रहता है। दानापुर के निकट गंगा में सोन नदी मिलती है। पहले यह संगम स्थल मनेर था जबकि रामायणकाल में यह नदी राजगीर के निकट बहती थी। सोन नदी का बालू पीला होने के कारण धूप में सोना जैसा चमकता है इसकारण इसे सोन नाम से जाना जाता है। यह नदी मध्य प्रदेश के अमरकंटक से निकलती है। बिहार में इससे नहर निकाला गया है जिससे भोजपुर, औरंगाबाद, गया और पटना जिला में सिचाई की जाती है। सोनपुर के निकट पहलेजा में गंगा में गंडक नदी मिलती है। गंडक नदी तिब्बत के धौलागिरि से निकलती है अपने उदगम स्थल पर शालीग्राम के नाम से जानी जाती है, नेपाल में नारायणी एवं सप्तगण्डकी नाम से जानी जाती है। गंडक नदी के तट पर सोनपुर स्थित है यहॉ विश्व का सबसे बड़ा पशु मेला प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमा से एक माह के लिये लगता है। यह क्षेत्र हरिहर क्षेत्र के नाम से जाना जाता है और यहॉ हरिहर मन्दिर है। गंडक नदी के दूसरे तट पर कोणहारा घाट है, पुराणों के अनुसार यही भगवान विष्णु ने हाथी को मगरमच्छ से बचाया था। गंडक नदी के जल में चूना मिला होता है जिस कारण ईख उत्पादन में सहायक होता है। फतुहा के निकट गंगा नदी में पुनपुन नदी मिलती है। यहॉ से आगे गंगा तट पर बख्तियारपुर, बाढ़, मोकामा, वेगूसराय, मुंगेर नगर स्थित है। मुंगेर नगर महाभारत काल में अंग प्रदेश था, यहॉ दानवीर राजा कर्ण शासन करते थे। चण्डी स्थान एक प्रसिद्ध मन्दिर है जो कि एक शक्ति पीठ है। मुंगेर के पूर्वोत्तर खगड़िया शहर के पास बुढ़ी गण्डक नदी गंगा नदी में मिलती है। मुंगेर से आगे गंगा नदी तट पर सुल्तानगंज है, यहॉ गंगा नदी उतरायण हो जाती है। हिन्दू कलेण्डर के सावन माह में शिव भक्त यहॉ से गंगा जल लेकर झारखण्ड राज्य में स्थित बैद्यनाथ धाम को जाते हैं। बैद्यनाथ धाम बारह ज्योर्तिलिंग में से एक है। सुल्तानगंज से आगे गंगा भागलपुर पहुचती है। भागलपुर अपने रेशम उ़धोग के लिये जाना जाता है साथ ही चावल एवं जर्दालू आम उत्पादन होता है। भागलपुर से कुछ आगे कटिहार जिला के कुरसेला में कोसी नदी गंगा में मिलती है, इस नदी को बिहार का शोक कहा जाता है। भागलपुर से आगे गंगा तट पर कहलगॉव स्थित है, यहॉ विद्युत उत्पादन का कार्य एन.टी.पी.सी. द्वारा किया जा रहा है।

आगे गंगा नदी झारखण्ड राज्य में राजमहल की पहाड़ी के बीच साहेबगंज, राजमहल होते हुए पश्चिम बंगाल राज्य में प्रवेश करती है। फरक्का में वैराज बनाकर गंगा के जल को संचित किया जाता है और पनबिजली उत्पादन होता है। उत्तर दिशा दार्जिलिंग से आने वाली नदी महानन्दा नदी दो धारा में बॅट जाती है, एक धारा फरक्का के आगे गंगा नदी में मिल जाती है और दूसरी धारा बंगलादेश में पहुचकर गंगा नदी में मिलती है। फरक्का बराज से 40 किलोमीटर आगे गंगा नदी दो वितरिकाओं में बॅट जाती है। इसकी मुख्य धारा भगीरथी एवं दूसरी धारा हुगली नदी कहलाती है। गंगा की मुख्य धारा भागीरथी कुछ ही दूरी के बाद बंगलादेश में प्रवेश करती है और इसका नाम बदलकर पद्मा हो जाता है। ब्रह्मपुत्र नदी तिब्बत से निकलकर भारत के असम राज्य होते हुए बंगलादेश पहुचती है, यहॉ इस नदी को जमुना नदी कहा जाता है। बंगलादेश में पद्मा नदी में जमुना नदी मिलती है। पद्मा नदी आगे चलकर भारत के मणीपुर से निकलनी वाली मेंघना नदी (वराक नदी) में मिल जाती है और आगे मेघना नदी कई धाराओं में बॅटकर सागर में मिलती है। फरक्का के आगे गंगा की दूसरी धारा जो हुगली नदी के नाम से जानी जाती है, इसके तट पर कोलकता नगर बसा है। कोलकता एक महानगर है जो भारत के चार प्रमुख नगर में से एक है। यह एक औधोगिक नगर है। कोलकता के निकट हुगली नदी में बाघेरकाल नदी मिलती है। आगे अच्छीपुर पहुचती है, इससे आगे हुगली नदी में दामोदर नदी एवं रूपनारायण नदी मिलती है। दामोदर नदी झारखण्ड राज्य में छोटानागपुर के पठार से निकली है। यह नदी कोयला क्षेत्र में बहती हुई हुगली में मिलती है। दामोदर नदी में कोयला के कण होने से इसका जल काला दिखता है और इसे भारत की सबसे गंदी नदी का जाता है। पश्चिम बंगाल में यह बाढ़ लाती है और बहुत बड़े पैमाने पर जान–माल की हानि होती है, इस कारण इस नदी को पश्चिम बंगाल का शोक कहा जाता है। हुगली नदी आगे डायमण्ड हार्बर और हल्दिया पहुचती है। आगे 35 किलोमीटर की दूरी तय कर हुगली नदी बंगाल की खाड़ी में मिलती है, मुहाने पर इस नदी की चौड़ाई 25 किलोमीटर का हो जाता है। बंगाल की खाड़ी में मिलने के पहले हुगली नदी दो शाखाओं में विभक्त हो जाती है और इन्ही दो शाखाओं के बीच गंगा सागर तीर्थ है। यहॉ प्रति वर्ष सूर्य मकर संक्रान्ति (14 जनवरी या 15 जनवरी) पर मेला लगता है। ऐसी मान्यता है कि इसी स्थान पर कपिल ऋषि का आश्रम था और यही पर राजा सगर के 60 हजार पुत्र भस्म हुए एवं राजा भगीरथ के प्रयास से गंगा धरती पर हिमालय में अवतरीत हुई और राजा सगर के 60 हजार पुत्र को मुक्ति हेतु गंगा सागर तक पहुची और मुक्ति प्रदान करते हुए सागर में मिल गई। गंगा नदी सागर में मिलने के पहले सुन्दर वन का डेल्टा बनाती है जो कि विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है। इस डेल्टा में मैंग्रोव वृक्ष पाये जाते हैं, इस डेल्टा क्षेत्र के वन में बंगाल टाईगर का निवास स्थल है। 1973 ई. में इस क्षेत्र को भी टाईगर रिजर्व क्षेत्र घोषित किया गया है। यहॉ पटशन (जूट) का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है। मधुमक्खी के बड़े–बड़े छत्ते होते हैं जिससे में काफी मात्रा में मध प्राप्त होता है। इस डेल्टा क्षेत्र में 52 टापू है और 51 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है, हल्दिया से 35 किलोमीटर की दूरी पर गंगा का सागर में मिलन होता है।

निष्कर्ष

गंगा नदी भारत में बहने वाली सबसे बड़ी एवं सबसे पवित्र नदी है। भौगोलिक दृष्टि से नदी की तीन अवस्था होती है, गंगा नदी अपने बाल्या अवस्था में उत्तराखण्ड में बहती है, युवा अवस्था में हरिद्वार से फरक्का तक बहती है और वृद्धा या प्रौढ़ा अवस्था में

फरक्का से मुहाना तक बहती है। इस नदी की धार्मिक मान्यता के साथ–साथ सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करती है। गंगा नदी जलोढ़ मैदान बनाती है, दीयर क्षेत्र में बालू और तलछट मिट्टी से बना काफी उपजाऊ है। गंगा नदी की प्रकृति हिमानी एवं मानसूनी है। इसके तट पर कई तीर्थ स्थल स्थित हैं। हरिद्वार एवं प्रयाग में कुम्भ मेला आयोजित होता है। बनारस, विन्ध्याचल जैसे तीर्थ स्थल पर वर्ष के सभी दिन लोगो का आना लगा रहता है। गंगा नदी के मुहाने पर स्थित तीर्थ गंगा सागर में जनवरी में मेला लगता है। इस नदी पर डैम बनाकर पन–बिजली उत्पन्न किया जा रहा है। नहर बनाकर खेतों तक पानी पहुचाया जा रहा है। गंगा नदी का परिवहन के रूप में उपयोग किया जा रहा है। विशेषकर पश्चिम बंगाल में नाव द्वारा चाय, पटशन, फल, सब्जी ले जाया जा रहा है। भविष्य में प्रयाग से हल्दिया तक स्टीमर चलाने की योजना है। इस नदी के जल में एक विशिष्ठ गुण यह है कि इसका जल कभी खराब नहीं होता है। गोमुख के पास गंगा जल में ऑक्सिडेसन रिडेम्सन प्रोटेन्सी (ओ.आर.पी.) ऋणात्मक है अर्थात् इसके जल के सेवन से मानव का जीवन बढ़ जाता है। कानपुर एवं इससे आस–पास के क्षेत्र में औद्योगिक संस्थानों से बहुत ज्यादा गंदा जल गंगा में डाला जा रहा है साथ ही मानवीय भूल से गंगा प्रदूषित हो रही है। गंगा को प्रदूषण मुक्त करने हेतु भारत सरकार द्वारा 2001 ई. में स्पर्श गंगा को और विस्तार देते हुए 2014 ई. में नमामि गंगा प्रयोजना चलाया जा रहा है। शहर के गंदा जल सीधे गंगा में न मिले बल्कि गंदा जल को ट्रिटमेन्ट पर नदी में डाला जाय। गंगा पर डैम बनाकर जल रोका जा रहा है। एक सीमा तक ही जल को रोका जाय, सीमा से ज्यादा जल रोकने से गंगा की अविरलता खत्म हो जायेगी और नदी नाला जैसा हो जायेगा। जन समान्य को भी गंगा को प्रदूषित होने से रोकने में सहयोग करना चाहिए।

संदर्भित ग्रन्थ

1. भारत का भूगोल– माजिद हुसैन, एम–सी. ग्रो. हिल
2. भूगोल एक समग्र अध्ययन, भाग–2– महेश कुमार वर्णवाल, कॉसमोस पब्लिकेशन
3. भारत की नदियॉ– राधाकान्त भारती, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
4. भारत का प्राकृतिक भूविज्ञान– शंकर मोहन माथुर, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया
5. उत्तराखण्ड में आध्यात्मिक पर्यटन मंदिर एवं तीर्थ– डा. सरिता शाह, डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि.
6. बिहार की नदियॉ (प्रथम खण्ड)– श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना
7. डब्बू डब्बू डब्बू. गैनगेज–रिवर. ओ आर जी
8. कल्याण तीर्थांक– गीता प्रेस
9. विजन गंगा (दिसम्बर 2017)–नेशनल मिशन फॉर क्लियर गंगा, जलसंशाधन विभाग, भारत सरकार
10. स्टेटस पेपर ऑन रिवर गंगा– नेशनल रिवर कन्जर्वेसन डाईरेक्ट, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार
11. महाभारत, खण्ड–2, गीता प्रेस
12. चार धाम यात्रा, पर्यटन विभाग, उत्तराखण्ड